International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2019 IJSRSET | Volume 6 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Education

प्रथम विश्वयुद्ध में रुस

डा0 विपिन कुमार नीरज
एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) उपाधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पीलीभीत

प्रथम विश्वयुद्व साम्राज्यवाद की कोख से पैदा हुआ था। लेनिन के शब्दों में, यह विश्व युद्ध पूँजीवाद की चरम अवस्था थी। अपने एक लेख में उन्होंने लिखा– साम्राज्यवाद पूँजीवाद की चरम अवस्था है। कुछ पूँजीवादी देशों द्वारा औपनिवेश व उत्पीड़न की विश्वव्यापी स्थापना के लिए लड़ा जा रहा यह युद्ध रूस को भी अपने में शामिल किए हुए था। रूस का जार जोकि खुद अपनी प्रजा पर भार बना हुआ था जिसके खिलाफ असंतोष प्रबल था उसके अंध–राष्ट्रवाद की तरफ मोड़ने की कोशिश करता रहा। उपनिवेशवादी उत्पीड़ित जातियों का निर्ममतापूर्वक शोषण करते व उनकी संपदा को लूटते थे।

साम्राज्यवाद पूंजीवादी देशों के मेहनतकशों के लिए अभूतपूर्व आपदाओं को साथ लेकर आया– इजारेदारी, उत्पीड़न, व्यापक बेरोजगारी, बढ़ता निर्वाह व्यय और भारी कर। मजदूरों तथा सभी प्रगतिशील शक्तियों के खिलाफ दमन चक्र तेज हो गया। साम्राज्यवाद की सबसे भयानक अभिव्यक्ति थी सैन्यवाद की वृद्धि। शस्त्रीकरण की होड़ में रूस भी शामिल हो गया था।

जारशाही जनमानस को अंधराष्ट्रवादी बनाने में लगी हुयी थी। बोल्शेविक पार्टी दूसरे इण्टरनेशनल के बैसेल घोषणापत्र जिसमें कहा गया था कि युद्व छिड़ने की हालत में उससे जनित संकट का उपयोग साम्राज्यवादी सरकारों का तख्ता पलटने के लिए किया जाना चाहिए। उस पर दृढ़तापूर्वक चल रही थी। उससे रूस के मजदूर वर्ग से संघर्ष को तेज करने का आह्वान किया। जो जारशाही के नींवो को हिला रहा था। राजतंत्र की विस्तारवादी योजनाओं का परदाफाश किया।

युद्व के प्रमुख कारणों में रूस तथा जर्मनी के बीच अंतर्विरोधों का होना था। रूसी पूँजीपतियों को नयी मंडियां चाहिए थी और उनकी निगाहें मध्य पूर्व पर जाकर टिकी, जहाँ जर्मन साम्राज्यवाद का प्रभाव पहले से ही बढ़ रहा था। यूरोप दो विरोधी साम्राज्यवादी खेमो में विभाजित हो गया– एक तरफ जर्मनी और आस्ट्रिया – हंगरी थे– तो दूसरी तरफ ब्रिटेन, फ्रांस और रूस। संयुक्त राज्य अमेंरिका नें यह दिखावा किया कि वह किसी भी तरफ नहीं है।

युद्व का एक और भी कारण था। शासक वर्ग क्रान्ति के पास आने का अनुभव कर रहे थे। सभी देशों के साम्राज्यवादी देशों को यह आशा थी कि युद्व मजदूर वर्ग को शक्तिहीन बना देगा। साम्राज्यवादियों के लिए युद्व अपनी सत्ता को कायम रखने और शासन को जारी रखने का साधन था। दूसरे इण्टरनेशनल का लगभग सभी पार्टियों ने मजदूरों का अपनी–अपनी बूर्जआ मातृभूमि की रक्षा करने के लिए आह्वाहन किया। दूसरे इण्टरनेशनल (कांग्रेस) का वहीं पतन हो गया।

सामाजिक जनवादी आन्दोलन के श्रेष्ठतम प्रतिनिधियों ने अवसरवाद के विरुद्ध

संघर्ष किया। लेकिन इस संघर्ष में अधिकतर अवसरवादियों का पलड़ा ही भारी रहां। इसके अलावा विभिन्न पार्टियों में ऐसे दल भी बन गये थे जो अवसरवाद की आलोचना तो करते थे। मगर साथ ही उनसे किनारा भी करने से डरते थे। इन दलों को मध्यमार्गी नाम मिला। इस प्रवृत्ति के नेता जर्मनी में कार्ल काउत्स्की और रूस में लेओन त्रोत्स्की थे। वे मध्यमार्गी अवसरवाादियों से कहीं अधिक खतरनाक थे।

दूसरे कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की अन्य पार्टियों के विपरीत बोल्शेविंक ने अवसरवादियों के साथ अपना संघर्ष अंत तक चलाया और उन्हें युद्ध छिड़ने से पहले ही पार्टी से बाहर निकाल दिया।

अक्टूबर 1914 को बोल्शेविक पार्टी के मुखपत्र ने जो उस समय स्विटजरलैण्ड से प्रकाशित होता था, युद्ध शांति और क्रान्ति के विषय में बोल्शेविक दृष्टिकोण के बारे में एक घोषणा पत्र प्रकाशित किया। इस घोषणा पत्र को लेनिन ने लिखा था। घोषणा पत्र में युद्ध के चरित्र को स्पष्ट किया गया था। दोनों युद्धरत देशों के पूँजीपति जनता को यह विश्वास दिलाना चाह रहे थे कि वे प्रतिरक्षात्मक युद्ध लड़ रहे है। लेनिन ने अपने लेखों के माध्यम से लोगों में स्पष्ट किया कि पहला विश्व युद्ध दोनों ही पक्षों की ओर से एक नाजायज और अपहारी साम्राज्यवादी युद्ध था। पितृभूमि की रक्षा के नारे के मतलब था बूर्जुआ वर्ग का राग अलापना व मजदूर वर्ग के हितों के साथ गद्दारी करना। लेनिन का मानना था कि साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में उत्पीड़ित वर्गों को अपने उत्पीड़कों के खिलाफ युद्ध में यनि क्रान्ति में बदल देने का नारा ही हो सकता है।

लेनिन तथा अन्य बोल्शेविकों ने जनसाधारण के बीच क्रान्तिकारी कार्यों को तेज करने का आह्वान किया। युद्ध ऋणों के पक्ष में मत देने से इन्कार मोरचों पर विपक्षी सेनाओं में भाईचारे का समर्थन किया। सभी मजदूर पार्टियों को अपनी सरकारों की पराजय सुनिश्चित करनी चाहिए।

बोल्शेविक पार्टी के घोषणा पत्र के विपरित त्रोत्स्की ने न विजय–न पराजय का नारा सामने रखा। जिसका सारतत्व जारशाही और साम्राज्यवाद को बरकरार रखना था।

जारशाही ने युद्धकाल में अभूतपूर्व आतंक कर राज कायम कर दिया बोल्शेविक पार्टी के प्रेस पर पाबंदी लगा दी गयी। हजारों वोल्शेविक पार्टी के कार्यकर्ता जेलों में ठूस दिये गये। जारशाही सरकार ने राजकीय दूमा के बोल्शेंविक सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमें चलाकर उन्हें साइबेरिया में आजीवन निर्वासन की सजा दे दी। उन्होनें अदालत में बडें साहस का परिचय दिया और यह पैगाम सुनाया कि साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में बदल दिया जाना चाहिए।

युद्ध ने जनता को घोर संकट में डाल दिया। देश की आर्थिक दशा लगातार खोखली होती गयी। परिवहन व्यवस्था के भंग होने के कारण शहरों को अनाज तथा अन्य खाद्य पदार्थों की पूर्ति में बहुत कमी आ गयी। भूख शहरी मजदूरों की तरफ मुँह बांये बढ़ रही थी। युद्ध के मोरचों पर पराजयों के कारण, जिनमें लाखों सैनिक अकारण ही मौत के घाट उतारे गये, समस्या और भी विकट हो गयी। जार और उसके मंत्रियों ने देश का प्रशासन कर सकने की अपनी पूर्ण अयोग्यता को पूरी तरह से दिखा दिया। जार के साथ बँधा बूर्जुआ वर्ग भी उससे कन्नी काटने लगा और राजगद्दी के लिये नये उम्मीदवार की खोज करने लगा। युद्ध के आरंभ में 1914 में देश में 70 हड़तालें हुई थी, जिनमें कोई 35 हजार मजदूरों ने भाग लिया था। 1915 में हड़तालों की संख्या 1 हजार के लगभग हो गयी और हड़तालियों की तादाद 5 लाख पहुंच गयी। युद्ध के तीसरे साल 15 लाख लोग हड़ताल में शामिल हुए।

रूस में मजदूर आन्दोलन ने मोरचों पर सेना की बेदारी को बहुत बढ़ा दिया। पूरी की पूरी रेजिमेंट अपने कमांडरों के आदेशों को मानने से इन्कार करने लगीं। हजारों की संख्या में सैनिक मोरचा छोड़कर जाने लगे। देहातों में किसानों में असंतोष और बढ़ गया। 1917 के फरवरी महीने में पेत्रोग्राद के मजदूरों ने विद्रोह कर दिया। नगर सेना के सैनिक भी उन्हीं के पक्ष में आ गये। मजदूरों और सैनिकों के सम्मिलित प्रहार के आगे स्वेच्छाचारी शासन धाराशाही हो गया। रोमानोव वंश का तीन सदी लंबा शासन समाप्त हो गया। मजदूरों और सैनिकों की सोवियतें स्थापित हुई। जो जनसत्ता के निकाय थी। सोवियतों के साथ–साथ एक अस्थायी सरकार भी अस्तित्व में आयी जो पूँजीपतियों की निकाय थी। क्रान्ति ने जारशाही के दमन चक्र का सफाया कर दिया। रूस एक स्वतंत्र देश बन गया। लेकिन रूस की आबादी में किसानों और निम्न–बूर्जुआ वर्गों का ही प्राधान्य था। उनका सोचना था कि क्रान्ति की विजय के फलस्वरूप युद्ध का चरित्र ही बदल गया है। जार का तख्ता पलट जाने के

कारण अब वह साम्राज्यवादी युद्ध नहीं रहा है। लेकिन बूर्जुआ वर्ग और जमींदार युद्ध को अब भी जारी ही रखना चाहते थे और वह अब भी साम्राज्यवादी नाजायज युद्ध ही था।

मजदूरों का बड़ा हिस्सा कुछ समय तक निम्न बूर्जुआ विचारों के प्रभाव मे रहा जिसके फलस्वरूप मेशेविकों तथा समाजवादी क्रान्तिकारियों का सोवियतों में प्रवेश हो गया और अधिकांश गैर पार्टी प्रतिनिधियों ने उनका समर्थन किया। निम्न बूर्जुआ पार्टियों के दबाव में सोवियतों ने स्वेच्छा से सत्ता अस्थायी सरकार को सौंप दी। क्रान्ति करने वाली जनता को शांति, रोजी–रोटी, जमीन और आजादी की चाह थी। लेकिन अस्थायी सरकार मेहनतकशों की ये आकांक्षाएं नहीं पूरा करना चाहती थी। अस्थायी सरकार ने लड़ाई को जारी रखा।

अस्थायी सरकार का मजदूरों की दशा सुधारनें का कोई इरादा नहीं था और उसने आठ घंटे के कार्य दिवस का डटकर विरोध किया जिसे मजदूरों ने अनुमति बिना शुरू कर दिया था। उसने जमीदारों की जमीन जब्त करके किसानों को देने से इन्कार कर दिया। उत्पीड़ित जातियों के आजादी देने की उसकी कोई मंशा न थी। उसने तो राजतंत्र के उन्मूलन की भी घोषणा नहीं की, रूस गणराज्य नहीं घोषित किया गया था बूर्जुआ वर्ग तथा जमींदार अब भी यह आशा कर रहे थे कि वे जार को फिर गद्दी पर आसीन कर देगें। फरवरी क्रान्ति के बाद बोल्शेविक पार्टी खुले रूप में अपने कार्य करने लगी। सारी सत्ता सोवियतों के नारे के साथ लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने आन्दोलन छेड़ा। मई दिवस पहली बार खुले तौर पर मनाया गया। इस सभा के बाद लोगों को यह आशा थी कि युद्ध का अंत कर दिया जायेगा। पर अस्थायी सरकार के विदेश मंत्री के इस वक्तव्य था कि रूस मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर लड़ाई जारी रखने के लिए तैयार है के विरोध में नाराजी से भरें कई हजार सैनिको ने जाकर उसके सामने प्रदर्शन किया जहाँ मंत्रिमण्डल की बैठक हो रही थी। अस्थायी सरकार प्रदर्शनकारियों के विरूद्ध हाथियारों का उपयोग करना चाहती थी लेकिन उसके पास इतनी ताकत नहीं थी। मास्को, उराल के शहरों तथा अन्य पुरूष औद्योगिक केन्द्रों में भी इस तरह के विरोध प्रदर्शन हुए। सरकार हिल गयी लेकिन समाजवादी क्रान्तिकारी और मेंशेविक उसे सहारा देने के लिए आ गये मजदूरों और सैनिकों के व्यापाक हिस्से समाजवादी क्रान्तिकारियों और मेशेविकों से विमुख होने लगें और उनका झुकाव बोल्शेविकों की तरफ होने लगा।

18 जून को मजदूर वर्ग पेत्रोग्राद सरकार और युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन कर रहा था, मोरचें पर सेनाएँ हमला कर रही थी। शत्रु के प्रत्याकमण से वह इलाका जीतता हुआ आगे बढ़ने लगा। अस्थायी सरकार की इन विश्वासधात पूर्ण कारवाइयों की बदौलत रूस ने हताहतों के रूप में लगभग 60 हजार लोग गंवा दिये। जनसाधारण का गहरा असंतोष अपने आप फूटकर सतह पर आ गया। 4 जुलाई 1917 को पाँच लाख से अधिक लोगों ने ''सारी सत्ता सोवियतों को'' के नारे के तहत प्रदर्शन किया। सरकार द्वारा जल्दी–जल्दी में लायी गयी फौजी टुकड़ियों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलायी। व्यापक पैमाने पर दमन शुरू हो गया। मजदूर और प्रदर्शन में भाग लेने वाली रेजिमेंटो को निरस्त कर दिया गया। बूर्जुआ वर्ग ने सत्ता को पूरी तरह से हथियाकर उद्योगपति कल–कारखानों को बंद कर मजदूरों को बेकार बनाकर सड़कों पर निकाल दे रहे थें। लाखों मजदूर बेकार हो गये। उनके घरों में लोग अन्न के लिए मेहताज हो गये। रूसी बूर्जुआ वर्ग और विदेशी साम्रज्यवादियों में स्थल सेना के प्रधान सेनापति जनरल कोर्नीलोव के नाम पर सहमति हो गयी जिसे सत्ता सौपने की साजिश थी। केरेन्स्की ने उसे अपने लिए भी खतरा महसूस किया। वह जनसाधारण की सहायता माँगने लगा। बोल्शेविक पार्टी के आह्वान पर जनता जनरलों की बगावत को कुचलने के लिए खड़ी हो गयी। पेत्रोग्राद की लालगार्ड टुकड़ियों और सैनिकों ने कोर्नीलोव की टुकड़ियों से टक्कर लेने के लिए, राजधानी की रक्षा करने के लिए मोरचे संभाल लिये। सैनिकों को जब जनरलों की योजनओं के बारे में बताया गया तो उन्होनें अपने अफसरों का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया। अस्थायी सरकार को नीत्रोलोब और उसके सह–षड़यंत्रकारियों को गिरफ्तार करना पड़ा।

कोर्नीलोव सैन्यवादियों के विरूद संघर्ष में सोवियतें फिर सक्रिय हो गयी। सोवियतों में बोल्शेविक पार्टी के लोगों की संख्या बढ़नें लगी। 7 लाख रेल मजदूरों ने जिदंगी की बेहतर हालातों की मांग करते हुए काम बंद कर दिया। सरकार ने अभी इस विवाद को हल किया ही था कि धातुकर्मियों और चमड़ा मजदूरों ने हड़ताल कर दी। उन्हीं के पीछे–पीछे 3 लाख से अधिक कपड़ा मजदूर भी हड़ताल पर चले गये। मजदूरों के इन हड़तालों की एक और भी विशेषता थी कितनी ही जगह पर मजदूरों ने मिलमालिकों को बाहर खदेड़ दिया और कारखानों के प्रबंधं को अपने हाथों में ले लिया। किसानों ने जमीदारों को खदेड़ बाहर करना, उनकी जमीनों औजारों और पशुधन को जब्त करना शुरू कर दिया।

मोरचे पर सैनिकों में व्याप्त असंतोष ने अस्थायी सरकार की सामूहिक अवज्ञा और सैनिक विद्रोहों का रूप ले लिया। लेनिन एंव वोल्शेविक पार्टी के कुशल नेतृत्व से 24 अक्टूबर को रूस में कम्युनिस्ट क्रान्ति सफल हुई। लेनिन ने विश्वव्यापी जनवादी शांति सन्धि के लिए अविलम्ब वार्ता शुरू करने का प्रस्ताव रखा। पहले ही दिन से सोवियत सरकार ने युद्धरत देशों के बीच जनवादी शांति सन्धि करवाने के लिए भरसक प्रयास किया ताकि अपराधपूर्ण साम्राज्यवादी युद्ध का अंत हो। किन्तु मि़त्र राष्ट्रों ने शांति की अपीलों पर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसी परिस्थिति में रूस ने महसूस किया कि मजदूरों और किसानों के राज्य को नष्ट होने से बचाना और काम के भविष्य को सुनिश्चित करना है तो उसे अकेले ही जर्मनी तथा उसके मित्र देशों के साथ शांति सन्धि–करनी होगी। फलस्वरूप 3 मार्च 1918 को ब्रेस्त लितोव्स्क में शांति सन्धि संपन्न की गयी। जर्मनी ने सोवियत रूस पर बहुत कठिन शर्ते थोपी जिनमें रूस के प्रदेशों पर जर्मन सेनाओं का कब्जा और हरजाने की अदायगी भी शामिल थी। किन्तु सोवियत रूस के लिए तो यह प्रावरक्षा का सवाल था और उसने सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये।

इस सन्धि के फलस्वरूप रूस युद्ध से अलग हो गया। वोल्शेविक पार्टी की स्थापना तो हो चुकी थी परन्तु उसके विरोधियों की रूस में कोई कमी नही थी। नवम्बर 1917 से 1919 ई0 के आरम्भ तक वोल्शेविकों को अपने विरोधियों से डटकर मुकाबला करना पड़ा। इंग्लैण्ड फ्रांस तथा अमेरिका वोल्शेविकों के इन विरोधियों का समर्थन कर रहे थें।

लेनिन ने जर्मनी के साथ सन्धि करके युद्ध की समाप्ति कर दी थी। मि़त्र राष्ट्रों को अधिक दवाव का सामना करना पड़ रहा था। वे चाहते थे कि रूस से बोल्शेविक शासन का अन्त हो और वहाँ ऐसी सरकार स्थापित हो जो जर्मनी के विरूद्ध युद्ध जारी रख सके। इन विरोधियों ने रूस के विभिन्न क्षेत्रों में बोल्शेविक सरकार के विरूद्ध विद्रोह आरम्भ किया। इन विद्रोहियों को मित्र राष्ट्रों की सेनाओं से मदद मिल रही थी। इस संघर्ष में एक समय ऐसा आया कि बोल्शेविक सरकार की सत्ता केवल पेत्रोग्राद और मास्कों तथा निकटवर्ती प्रान्तों तक ही सीमित रह गयी थी। किन्तु अन्त में लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने विजय प्राप्त की। मित्र राष्ट्रो ने रूस का आर्थिक बहिष्कार करके उसकी आर्थिक समस्या और भी बढ़ा दी थी। इस समय रूस को एक भंयकर अकाल का भी सामना करना पड़ा। किन्तु लेनिन के नेतृत्व में रूसियों ने इस पर विजय प्राप्त किया। बोल्शेविकों ने सफलतापूर्वक अपने विरोधियों का दमन किया।

साम्राज्यवादी राज्यों ने रूस पर सशस्त्र हमले के बारे में आपस में समझौता कर लिया था यह भी तय हो गया था कि कौन किन प्रदेशों पर अधिकार करेगा। तुंरत ही इस योजनाओं पर अमल होने लगा। दिसम्बर 1917 में बूर्जुआ तथा जमींदारों द्वारा शासित रूमानिया ने फ्रांस की शह पर बेस्सराविया पर कब्जा कर लिया। 1918 में आसन्न 'जर्मन हमले' को रोकने की आवश्यकता के बहाने फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने मुर्मान्स्क में अपने सैनिक उतारे। अगस्त 1918 में में उन्होने अर्खागेल्स्क पर भी अधिकार कर लिया जहाँ प्रतिक्रान्तिकारियों ने सोवियत शासन के विरूद्ध बगावत की हुई थी। आक्रामकों और प्रतिक्रान्तिकारियों की संयुक्त शक्ति ने नगर मे सोवियत सत्ता को उलट दिया। नगर पर आक्रमकों का निर्मम अध्यासी शासन स्थापित हो गया और इलाके की संपदा को बेलगाम लूटा जाने लगा।

4 अप्रैल 1918 को ब्लादीवोस्तक में जापानी एजेण्टों ने दो जापानियों की हत्या कर दी। 5 अप्रैल 1918 की जापानी सैनिकों ने विदेशी नागरिकों के जान–माल के रक्षा के बहाने ब्लोदीवोस्तक के समुद्र तट पर उतरकर नगर पर कब्जा कर लिया।

मित्र राष्ट्रों का हस्तक्षेप सोवियत शासन समाप्त करने के लिए जारी था, इनकी मदद से ही प्रतिक्रान्तिकारी एवं जमीदारों ने श्वेतगार्ड सेना खड़ी कर ली। श्वेत गार्ड सेनाएं मित्र राष्ट्रों की मदद से व्यापक हिस्से पर बढ़ रही थी। पर लेनिन के कुशल नेतृत्व में वोल्शेविक पार्टी ने पूरे देश को ही फौजी छावनी में तब्दील कर श्वेतगार्डो को परास्त किया एवं व्यापक गोलवंदी से विदेशी हस्तक्षेप को रोकने में सफलता प्राप्त की।

प्रथम विश्व युद की समाप्ति के बाद भी मित्रराष्ट्रों का सशस्त्र हस्तक्षेप और भी बढ़ गया। सोवियत जनता के खिलाफ अपराधपूर्ण युद्ध मे भाग लेने वाले विदेशी सैनिकों और अफसरों की संख्या 3 लाख से अधिक हो गयी। चर्चिल ने सोवियत संघ को समाप्त करने का अथक प्रयत्न किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान प्रमुख रूप से रूस की जो स्थितयाँ थी वह यह थी कि एक तरफ जारशाही साम्राज्यवादी स्वरूप अख्तियार कर अपने खिलाफ उबल रहे असंतोषों को रोकना चाहती थी। दूसरे भी कुछ कारण उत्पन्न हुए थे जिन्होने रूस को एक नयी दिशा में मोड़ा। रूस की आर्थिक स्थितियों में इसकी विदेशी पूँजी पर भारी निर्भरता थी। बीसवी शताब्दी में बढ़ते हुए उत्पादन के बावजूद साम्राज्यवादी रूस पश्चिमी देशों की तुलना में पिछड़ता जा रहा था। 1916–17 में विदेशी मुद्रा लगभग ढ़ाई अरब रूवल हो गयी थी जो उद्योग में लगी कुल पूँजी के तीसरे भाग के बरावर थी।

युद्ध के कारण उद्योगों का निर्जीवीकरण प्रकट रूप में सामने आया। अनेक फैक्टरियों में कोयले और लोहे की कमी के कारण उत्पादन मे कमी करनी पड़ी। इसका कारण केवल यही नहीं था। कि सैनिकों तथा रसद को ले जाने के कारण परिवहन मार्ग अवरूद्ध थे। उद्योग युद्ध की अपेक्षाओं को पूरा करने में पूर्णतः असमर्थ रहे। तेल का उत्पादन गिरता चला गया। कोयला, कच्चें लोहे तथा निर्मित लोहें के उत्पादन में थोड़ी वृद्धि हुई किंतु इससे सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकी। उत्पादन की कमी उत्पादन क्षमता के कारण नही थी। वरन समुचित संचार व्यवस्था के लगातार अभाव के कारण थी। लंबी दूरी तक खदानों से फैक्टरियों तक कच्चा माल पहुंचाने और फैक्टरियों से उपभोक्ता केन्द्रों तक निर्मित माल तेजी से पहुंचाने का काम रेलों द्वारा सुनिश्चित नहीं किया जा सका।

सैनिक भर्ती से फैक्टरियों और गाँवो दोनो की ही हानि हुई और यह तथ्य भी सामने आया कि उद्योगों में हुई श्रमिकों की कमी को किसानों को काम पर लगाकर पूरा करना इतना आसान नहीं था। युद्ध की आंरभिक अवस्थाओं रूसी सैनिकों के भारी संख्या में मारे जाने का फल यह हुआ कि बाद में पर्याप्त योग्यता प्राप्त सैनिकों को नियोजित करके इस कमी को पूरा करना कभी संभव नहीं हो सका। 1914–18 के विश्व युद्ध में रूस को सभी युद्धरत राष्ट्रो की अपेक्षा अधिक हानि हुई। उसे जो क्षति पहुंची वह युद्ध की सफलताओं से संतुलित न हो सकी। आर्थिक पिछड़ेपन के कारण रूस शत्रुओं का कड़ा मुकाबला नहीं कर पा रहा था और कई सैनिक टुकड़ियों ने युद्ध लड़ने से इंकार कर दिया। शहरों को जनसख्या को भी भारी परेशानी उठानी पड़ती थी क्योंकि उन्हें खाद्यान्न और ईधन मुश्किल के उपलब्ध हो रहे थें। रूस का युद्धकालीन कुल खर्चा 4.700 करोड़ रूबल था। विदेशी और आन्तरिक युद्ध ऋणों से 4,200 करोड़ रूबल एकत्रित किये गये। मुद्रास्फीति बड़ी तेजी से हुई। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम विश्व युद्ध में रूस की स्थिति सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से बहुत ही उथल–पुथल की रही। रूस ने इस युद्ध का विरोध करते हुए अपने को समाजवाद के पथ पर चलने के लिए अपनी बूर्जुआ सरकार को उखाड़ फेंका एवं जनमानस के लिए जनवादी जनतंत्र का रास्ता प्रस्तुत किया।

सन्दर्भ सूची

1. डा0 पुष्पेश पंत, श्रीपाल जैन – अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध – सिद्धान्त और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ 2006
2. लाल बहादुर वर्मा – यूरोप का इतिहास (भाग1, भाग2)

प्रकाशन संस्थान, दिल्ली 2008,

3. च्संउमत ंदक च्मतापदे . प्दजमतदंपजवदंस त्मसंजपवदेए भ्वनहीजवद

डपींसिपदए ठवेजंद 1957

4. जैन–माथुर – आधुनिक विश्व इतिहास 1500–2000

तक, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर 2008

5. डा0 एस0एस0 श्रीवास्तव, – अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

डा0 वी0 पी0 जोशी कृष्णा प्रकाशन मन्दिर, मेरठ, 1989

6. म्भ्भ् ब्तत . ।भ्पेजवतल वि॑वअपमज त्नेपं ;1950.78द्ध

डंबउपससंद दृ स्वदकवद 1978